17 / 10 / 81 की अव्यक्त वाणी

पर आधारित योग अनुभूति

उड़ता पंछी बन सभी परिस्थितियों को सहज पार करने का अनुभव

➢➢ मैं फरिश्ता अव्यक्त वतन में हूँ

➳_ ➳ सफेद प्रकाश की दुनिया में

➳_ ➳ मैं लाइट की ड्रेस में हूँ

→ मैं बिलकुल हल्का

→ डबल लाइट फरिश्ता हूँ

◆ मेरे सामने खड़े हैं अव्यक्त वतन वासी

◆ प्यारे बापदादा

◆ जो मुझे वरदानो से भरपूर कर रहे हैं

• मैं फरिश्ता ईश्वरीय कार्य में सहयोगी हूँ

• मैं अवतरित फ़रिश्ता हूँ

➳_ ➳ मैं फरिश्ता सर्व बन्धनों से मुक्त हूँ

→ मेरे इस मरजीवा जन्म में

→ पुराने सभी खाते खत्म हो गये हैं

→ देह और

→ देह की दुनिया के

◆ सम्बन्ध समाप्त हो गये हैं

◆ मैं कर्मयोगी हूँ

• मैं आत्मा मालिक हूँ

• मालिक बन कर्मेन्द्रियों से

• कर्म करा रही हूँ

➳_ ➳ मुझ फरिश्ते ने केवल

➳_ ➳ सेवा अर्थ

➳_ ➳ इस तन का आधार लिया है

→ मैं उड़ने वाला फ़रिश्ता हूँ

→ मैं उड़ता पंछी हूँ

◆ मैं हर परिस्थिति को

◆ उडती कला से

◆ पार कर रहा हूँ

• फरिश्ता बन

• उड़ता पंछी बन

- परिस्थितियों को
- सहज पार कर रहा हूँ

➳_ ➳ मुझ फरिश्ते ने

➳_ ➳ सभी मेरे मेरे को

➳_ ➳ एक बाप को अर्पित कर दिया है

→ सब कुछ बाबा का है

→ बस एक बाप ही मेरा है

◆ मैं अव्यक्त रूपधारी फरिश्ता हूँ

◆ सदा न्यारी और प्यारी

◆ स्थिति में स्थित हूँ

- मैं कर्मयोगी फरिश्ता हूँ
- सर्व बन्धनों से मुक्त हूँ